वैदिक कालीन शिक्षा का आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

डॉ0 रमेन्द्र तिवारी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज

शिक्षा विषयक एस0एस0 मेकेन्जी की परिभाषा ध्यातव्य है। उनके अनुसार, ''व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन–पर्यन्त चलती है तथा जो जीवन के प्रत्येक अनुभव से संवर्धित होती है।'' वस्तुतः शिक्षा का तात्पर्य मात्र बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भर देना नहीं है, प्रत्युत् शिक्षा अन्तर्निहित शक्तियों के विकास एवं सर्वांगीण उन्नति का अन्यतम साधन है जिसके द्वारा बालक स्वयं अपने व्यवहार का परिष्कार करते हुए अपने व्यक्तित्व को समाजोपयोगी बनाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मत है कि, ''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएँ नहीं देती वरन् हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म्य स्थापित करती है।'' इस दृष्टि से डॉ0 एस0एस0 माथुर की शिक्षा–विषयक यह अवधारणा द्रष्टव्य है–

''आज शिक्षा का उद्देश्य बालक के वर्तमान का निर्माण करना है, बालक के जीवन की प्रत्येक अवस्था में उनके अभिवर्द्धन और विकास में सहयोग करना है। शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया की एक स्थिति है, जिसका उद्देश्य समाज के सदस्यों को आजीवन अपने वर्ग में रहने के योग्य बनाना है।''

शिक्षा के अर्थ में वैदिक वाङ्मय में 'विद्या' या 'ज्ञान' जैसे शब्दों का प्रयोग उपलब्ध होता है। शिक्षा शब्द तात्कालिक ग्रन्थों में उच्चारण की शिक्षा देने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद भाष्य में उद्धृत है– ''स्वरवर्णाद्युच्चारण प्रकारो यत्र शिक्ष्यते उपदिश्यते सा शिक्षा'' अर्थात् जिसमें स्वर वर्णादि के उच्चारण के प्रकारों की शिक्षा या उपदेश दिया जाये वह शिक्षा है। वहाँ शिक्षा पद का तात्पर्य षड्वेदांगों में से केवल एक अंग 'शिक्षा' से था। तैत्तिरीयोपनिषद् में शिक्षा की व्याख्या करते हुए वर्ण, स्वर, मात्रा, बल (प्रयत्न), साम और सन्तान (सन्धि) को शिक्षा का अध्याय बताया गया है। इसकी व्याख्या करते हुए शंकराचार्य ने 'जिससे वर्णादि का उच्चारण सीखा जाये उस प्रक्रिया को अथवा जो सीखा जाये उन अकारादि वर्ण को' शिक्षा कहकर परिभाषित किया है। इस शोध प्रबन्ध में शिक्षा शब्द का प्रयोग आधुनिक शिक्षाशास्त्र द्वारा प्रतिपादित अर्थ में हुआ है।

वैदिक युग में गुरुकुल शिक्षा–पद्धति प्रचलित थी। इसमें उपनयन संस्कार के पश्चात् शिष्य गुरु के आश्रम में प्रवेश करता था और वहाँ गुरु के संरक्षण में उसके परिवार के साथ निवास करते हुए विद्यार्जन करता था। शिष्य की शिक्षा के साथ ही उसके रहने, खाने–पीने आदि की पूरी व्यवस्था आचार्य के अधीन होती थी। इस प्रणाली में आचार्य सभी छात्रों के प्रति

समान रूप से व्यवहार करते थे। गुरुकुलों में धनी–निर्धन, उच्च कुल–निम्न कुल, राजा–रंक , बुद्धिमान–जडमति सभी वर्गों के बालक एक साथ रहते हुए समभाव से जीवन व्यतीत करते थे। शिष्य के लिए निर्देश था कि वह आज्ञाकारी एवं संयमी हो और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे। गुरुकुल शिक्षा–पद्धति का स्वरूप अत्यन्त व्यवस्थित और सुनियोजित था। व्यक्ति को लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के लिए मूल्यपरक शिक्षा प्रदान की जाती थी। जिसका लक्ष्य सूचना एकत्र करना मात्र नहीं था, अपितु शिष्यों के विचार और आदर्श को उदात्त जीवन मूल्यों से अनुप्राणित करके उसके जीवन शैली का परिमार्जन करना था।

वैदिक काल में शिक्षा का प्रयोग ज्ञान विद्या, विनय और अनुशासन के पर्याय रूप में किया जाता था। सामान्यतः परिवारों में विद्यारम्भ संस्कारों और गुरुजनों में उपनयन संस्कार के बाद विभिन्न विषयों में दिये जाने वाले ज्ञान एवं कला कौशल को शिक्षा कहा जाता था। शिष्य जब गुरुकुल की शिक्षा पूरी कर लेते थे तो समावर्तन समारोह होता था और इस समारोह में गुरु शिष्य को एक उपदेश यह भी देते थे कि स्वाध्याय में कभी आलस्य मत करना। (स्वाध्यायान्मा प्रमदः)। उस काल में जीवन भर स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन किया जाता था।

वस्तुतः शिक्षा का तात्पर्य मात्र बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भर देना नहीं है, प्रत्युत् शिक्षा अन्तर्निहित शक्तियों के विकास एवं सर्वांगीण उन्नति का अन्यतम साधन है जिसके द्वारा बालक स्वयं अपने व्यवहार का परिष्कार करते हुए अपने व्यक्तित्व को समाजोपयोगी बनाता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का मत है कि, ''सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमें केवल सूचनाएँ नहीं देती वरन् हमारे जीवन और सम्पूर्ण सृष्टि में तादात्म्य स्थापित करती है।''

वैदिक काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता था। शिक्षा को प्रकाश का स्रोत अन्तर्दृष्टि, अन्तर्ज्योति, ज्ञान–चक्षु और मनुष्य का तीसरा नेत्र माना जाता था। वैदिक काल के लोगों का विचार था कि शिक्षा का प्रकाश व्यक्ति के सब संशयों का उन्मूलन और उनकी सब बाधाओं का निवारण करता है। शिक्षा से प्राप्त अन्तदृष्टि व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न करती है। उसे जीवन के यथार्थ को समझने की क्षमता प्रदान करती है और उसे भवसागर को पार करके मोक्ष–प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है। (सा विद्या 'या विमुक्तये) वैदिक कालीन शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुए डा0 ए0एस0 अल्तेकर ने लिखा है– ''शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता थ, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक औरा आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्त एवं सामंजस्य पूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''

वर्तमान की नींव अतीत में होती है। हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली की बुनियाद भी वैदिक शिक्षा प्रणाली है। यद्यपि कि हमारे देश में वैदिक शिक्षा प्रणाली के पश्चात् बौद्ध शिक्षा, मुस्लिम शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ किन्तु वैदिक शिक्षा प्रणाली प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनवरत चलती रही और आज भी चल रही है। आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में वैदिक शिक्षा की आधारभूत भूमिका है।

निःशुल्क शिक्षा, व्यापक उद्देश्य, व्यापक पाठ्यचर्या, गुरु–शिष्यों का अनुशासित जीवन, गुरु–शिष्यों का मधुर सम्बन्ध और शिक्षण संस्थाओं की संस्कार प्रधान पद्धति आदि वैदिक शिक्षा

के अनेक ऐसे तत्व हैं जिनका विस्तृत अध्ययन आधुनिक शिक्षा में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए आवश्यक है।

आदर्शवादिता, अनुशासन, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, नैतिकता का विकास, शिक्षण विधियों व सिद्धान्तों का विकास, छात्रों का सरल जीवन आदि वैदिक शिक्षा के ऐस अनेक ग्रहणीय तत्व हैं जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए प्रासंगिक है।

ईश्वर भक्ति, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति और संस्कृति का संरक्षण व प्रसार वैदिक कालीन शिक्षा के प्रमुख आदर्श व उद्देश्य थे।

ईश्वरीय शक्ति के प्रति अनास्था धार्मिक भावना में निरन्तर रहा ह्रास, सामाजिक कर्तव्यों से विमुख होकर स्वयं के विकास तथा व्यक्ति वाद को बढ़ावा देना नैतिक मूल्यों में गिरावट, भोग की बढ़ती हुई प्रवृत्ति आदि जीवन में व्याप्त विसंगितयों को दूर करने के लिए वैदिक शिक्षा के उच्च आदर्शों और उद्देश्यों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुर्नस्थापित करना अपरिहार्य प्रतीत होने लगा है।

मानव जाति का स्वर्णिम युग समाप्त होता जा रहा है। हम निरन्तर विनाश की ओर बढ़ रहे है। मानवीय मूल्यों में तीव्र गति से ह्रास हो रहा है। सामाजिक जीवन अस्त व्यस्त हो रहा हैं। व्यक्ति स्वार्थी, अवसरवादी, भोगी एवं चाटुकारी एवं कर्त्तव्य–विमुख हो रहा है।

समाज में प्रत्येक मनुष्य का उद्देश्य होता है कि वह सत्य, अहिंसा आदि शाश्वत् मूल्यों का पालन करे। मूलतः उन्हीं शाश्वत मूल्यों का वर्तमान में संरक्षण होता है जो सम्पूर्ण मानव समाज के आधार स्तम्भ है। उन शाश्वत मूल्यों का पुनर्स्थापन एवं संरक्षण अपरिहार्य है। गिरते हुए मूल्यों को ऊपर उठाने के लिए शिक्षा को ऊपर उठाना आवश्यक है।

वर्तमान में छात्र ही भावी समाज के निर्माता हैं। अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनमें मानवीय मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत मूल्यों का संरक्षण हो। छात्रों को इसके लिए मूल्य परक शिक्षा दी जानी चाहिए। मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए छात्रों में गिरावट को रोकना होगा। छात्रों में गिरावट का मुख्य कारण है शिक्षा में गिरावट।

वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण संस्थाओं का स्वरूप, गुरु–शिष्य के प्रति कर्त्तव्य, शिष्य का गुरु के प्रति कर्त्तव्य परिवार व समाज व राष्ट्र के प्रति छात्र का कर्त्तव्य आदि विभिन्न तत्वों की समीक्षा वैदिक शिक्षा के आलोक में प्रासांगिक है। वैदिक शिक्षा प्रणाली की नींव पर ही वर्तमान शिक्षा का भवन खड़ा हैं शिक्षा जगत में व्याप्त विकृतियों को दूर करेन के लिए वैदिक शिक्षा का विशद अध्ययन और उसमें शिक्षा के पोषक तत्वों को ग्रहण करना वांछनीय है।

वैदिक शिक्षा से वर्तमान शिक्षा में बहुत कुछ सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष–

''वैदिक कालीन शिक्षा का आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता'' से विचार करते हुए वर्तमान शिक्षा–व्यवस्था के लिए कुछ दिशा–निर्देश दे सकते हैं। यदि अभिभावक, शिक्षक, समाज आपस में एकजुट होकर शिक्षा के क्षेत्र में सामूहिक विचार करें एवं सामूहिक निर्णय लें तो अवश्य ही

हमारी शिक्षा प्रणाली फिर से पहले जैसा सुचरित्र, सदाचारी तथा कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थियों को जन्म दे सकती है।

यह प्रश्न स्वाभाविक है कि आज की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में प्राचीन शिक्षा किस रूप में अपनी भूमिका अदा कर सकती है। मानव जीवन के विविध पक्ष होते हैं, और उनकी अपनी–अपनी समस्याएँ होती हैं। शिक्षा की भी अपनी समस्या है। व्यक्ति को शिक्षित करना, सुव्यवस्थित जीवन के लिए दिशा निर्देश करना शिक्षा का कार्य है। यह बात वैदिक कालीन की तरह आज भी है। परन्तु देश और काल के अनुसार प्राचीन और आधुनिक में अन्तर होता है। प्राचीन अपने को आधुनिक के बीच तभी प्रतिष्ठित कर पाता है, जब अपने में कुछ परिवर्तन लाकर आधुनिक के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसका उपयोग तभी देखा जा सकता है, जब इसमें आज के अनुसार परिवर्तन हो। वैदिक कालीन में शिक्षा गुरुकुल में दी जाती थी। गुरु एवं शिष्य भिक्षाटन के आधार पर जीवन यापन करते थे किन्तु आज यह सम्भव नहीं है।

वैदिक कालीन शिक्षा में व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, आध्यात्मिकता तथा मोक्ष पर विशेष बल दिया जाता था। मानव जीवन में आध्यात्मिकता को श्रेष्ठता प्राप्त है, खास तौर पर भारतीय संस्कृति तो इसके लिए प्रसिद्ध है। परन्तु आज के वैज्ञानिक युग में मूलतः आध्यात्मिक शिक्षा पर्याप्त नहीं है।

अतः वैदिक कालीन शिक्षा की वैज्ञानिक पद्धतियों को अपना कर वर्तमान शिक्षा को और प्रभावशाली एवं उपयोगी बनाया जा सकता है। प्राचीन शिक्षा की जो मौलिक अवधारणाएँ हैं, उनकी आज के समाज को आवश्यकता है। खून–खराबा से भरा हुआ आज का अशान्तिमय समाज अहिंसा को अपनाकर शान्ति प्राप्त कर सकता है, तथा सामाजिक विषमता को अपरिग्रह से हटाया जा सकता है।

भारतवर्ष ही नहीं बल्कि समुचे विश्व में अशान्ति, आर्थिक विषमता, सामाजिक असमानता को दूर करने के लिए प्राचीन शिक्षा आज भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आधुनिक परिवेश में इसमें किंचित परिवर्तन एवं परिवर्धन के साथ समाविष्ट किया जा सकता है।

वैदिक कालीन शिक्षा का समावेश वर्तमान मानव जाति में सद्भावना का संचार कर सकती है, शान्ति की स्थापना में सहयोग कर सकती है, और समूची मानव जाति की मानसिकता में समानता की दृष्टि उत्पन्न कर सकती है। वर्तमान युग में जहाँ विज्ञान एवं भौतिक उपलब्धियाँ अपने चरमोत्कर्ष को दू रही है, वहीं दूसरी ओर मानवता बौनी हो गयी हैं। इस विश्रृखंलित मानवता का युग में प्राचीन शिक्षा एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में दिखाई पड़ती है, जिसका आधुनिक शिक्षा में समावेश लोगों में सद्भावना, समानता एवं शान्ति स्थापित कर सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- कुमार, संजय (2016–18). वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था तथा आधुनिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की उपादेयता का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह पी0जी0 कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर।

- गोपाल, मदन (2014). भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में वैदिक कालीन शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- गुप्ता, एस0पी0 (2008), भारतीय शिक्षा का विकास तथा समस्यायें, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
- जैन, साधना (2015). आदिपुराण में जिनसेन की शिक्षा एवं दर्शन नामक विषय पर पी–एच0डी0 शोध, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, चुड़ैला, झुन्झुनूं (राजस्थान)
- प्रकाश ओम (2012). 'शिक्षा में सांख्य दर्शन का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन', अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।
- पाण्डेय, राहुल (2015). बीसवीं शताब्दी के सन्दर्भ में अद्वैत दर्शन का स्वरूप, पी–एच0डी0 शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।